चक्रव्यूह

श्रवणकुमार गोस्वामी

चक्रव्यूह

श्रवणकुमार गोस्वामी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर, 2025

© श्रवणकुमार गोस्वामी

आधुनिक जीवन की भ्रष्टता और विषमताओं का चित्रण करने में श्रवण कुमार गोस्वामी को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। पिछले दशक में प्रकाशित एक के बाद एक उनके उपन्यास में इस यथार्थ पर उनकी पकड़ निरंतर मज़बूत होती गई है और वे बड़ी कुशलता से जीवन के विविध पक्षों की सच्चाइयाँ पर्त-दर-पर्त खोलते चले जा रहे हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने हमारे विश्वविद्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या को उठाया है और उन सब तानों-बानों को अपनी पूरी बारीकी में उजागर किया है जो कुलपति, कुलसचिव, अध्यापक, शिक्षामंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल तथा केंद्रीय अधिकारियों आदि सभी संबद्ध व्यक्तियों तक घना बना हुआ है। यह एक चक्रव्यूह है जिसमें ज्ञान का अभिमन्यु बुरी तरह फँसा हुआ है।

डॉ० पीटर ने दरवाजे की तरफ देखा- वहां लीली भंडारी खड़ी मुस्कुरा रही थी। उसके दाहिने हाथ में बैग पाइपर की एक बोतल और बायें हाथ में प्लास्टिक की एक खूबसूरत थैली लटक रही थी। एक बार लीली की ओर देख कर डॉ० पीटर ने दीवार घड़ी की ओर अपनी नजर घुमा ली। कमरे में प्रवेश करते हुए लीली ने मुस्कुरा कर कहा – "सॉरी सर, थोड़ी देर हो गयी।"

डॉ० पीटर ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सोफे पर आकर चुपचाप बैठ गये। सामने बैठते हुए लीली ने सेंट्रल टेबुल पर बैग पाइपर की बोतल रख दी। प्लास्टिक की थैली से उसने एक पैकेट निकाला। वह उठकर अंदर चली गयी और अपने साथ दो प्लेटें और चम्मच लेकर आ गयी। पैकेट खोल कर उसने छोटी प्लेट में तले हुए काजू रख दिये और बड़ी प्लेट में मुर्ग मुसल्लम।

काजू और मुर्ग मुसल्लम की खुशबू पाते ही डॉ० पीटर को बड़ा अच्छा लगा, पर वह अभी भी चुप बैठे थे। लीली ने बड़े उत्साह से उनकी ओर देखते हुए कहा, "सर, इस मुर्ग मुसल्लम के चलते ही देर हो गयी। यह यहां का बना हुआ नहीं है। इसे मैंने एक लाइन होटल से बनवा कर मंगवाया है। यहां से कोई चालीस मील है वह होटल। खाकर देखिए सर, मन खुश हो जायेगा।"

"क्या हुआ था आज तुम्हारे कॉलेज में ?" — डॉ० पीटर ने अपना मुंह खोला।

यह सुनते ही लीली का चेहरा एकाएक फक्क हो गया। वह क्या उत्तर दे, वह तुरंत सोच नहीं सकी। बात टाल देने की गरज से उसने अपना माथा झुकाये - झुकाये ही कहा – "कोई खास बात नहीं थी, सर ! यह सब तो चलता ही रहता

"लेकिन, यह सब कब तक चलता रहेगा ? मैं तुम लोगों को आखिर कब तक बचाता रहूंगा ? मालूम है, तुम लोगों के चलते मेरी छुट्टी होते-होते बची है। इस बार मुझे अपने को बचाने के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है।"

"दो लाख।"— धीरे से लीली बोल गयी।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?" — डॉ० पीटर चौंक पड़े।

"मुख्यमंत्री के निजी सचिव से।" – लीली ने इस बार डॉ० पीटर से आंखें मिलाते हुए कहा।

इसके बाद डॉ० पीटर कुछ देर तक कुछ भी नहीं बोले। वह लीली को केवल ध्यान से देखते रहे। लीली ने बैग पाइपर का ढक्कन ढीला कर दिया। फिर वह उठी। भीतर गयी। इस बार वह दो गिलास और दो सोडा वाटर की बोतलें लेकर आ गयी। उसने पूछा- "सर, बर्फ तो शायद यहां नहीं हो ?"

"नहीं।" – डॉ० पीटर का बड़ा ठंडा उत्तर था।

लीली उठ कर बाहर निकल गयी। जब वह लौटी तो उसके साथ एक युवती थी। उम्र रही होगी अठारह उन्नीस। गोरा रंग। बड़ी-बड़ी आंखें। नीले रंग की साड़ी और ब्लाउज। दोनों ही हाथों में स्टील की एक-एक पतली चूड़ी।

लीली ने युवती की ओर मुस्कुरा कर देखते हुए कहा - "आरती, इन्हें प्रणाम करो। यही हैं वी.सी.।"

आरती ने चुपचाप अपने दोनों हाथ जोड़ दिये।

डॉ० पीटर ने 'हुं' कह कर एक बार ऊपर से नीचे तक आरती को बड़े ध्यान से निहार लिया। लीली समझ गयी। उसने तत्काल ही कहा – "मैं आपके चैम्बर में बैठ जाती हूं, सर।"

लीली कमरे के बाहर चली गयी।

डॉ० पीटर ने आरती से कहा- "दरवाजा भिड़का कर मेरे नजदीक बैठ जाओ।"

आरती ने सुना, फिर भी वह अपनी जगह पर ही खड़ी की खड़ी रही। उसने पीछे दरवाजे की तरफ नजर घुमाकर देखा, पर वह आगे न बढ़ सकी। आरती की झिझक डॉ० पीटर से छिपी न रह सकी। वह स्वयं उठे। आगे बढ़ कर उन्होंने खुद दरवाजे को भिड़का दिया और सिटकनी भी चढ़ा दी।

आरती के कंधे पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए डॉ० पीटर ने बड़े प्यार से कहा – "आओ, यहां बैठो। डरो मत।"

आरती डॉ० पीटर के सामने बैठ गयी।

डॉ० पीटर ने बैग पाइपर की बोतल खोली। एक खाली गिलास आरती की ओर सरकाकर उसमें थोड़ी व्हिस्की उड़ेल दी और अपने गिलास में भी। दोनों में सोड़ा मिलाते हुए डॉ० पीटर ने पूछा- "पढ़ती हो ?" "जी।"—आरती ने धीरे से जवाब दिया।